Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन

डॉ0 अवधेश कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

प्रिंस कुमारी
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 6, Issue 6
Page Number : 118-125
Publication Issue :
November-December-2023
Article History
Accepted : 10 Dec 2023
Published : 30 Dec 2023

सारांश–समस्या कथन के अन्तर्गत विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन किया गया है। समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्वक ढंग से विश्वविद्यालयों का चयन जिसमें प्रयागराज जनपद के एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रयागराज, प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह (रज्जु भैया) विश्वविद्यालय एवं नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) का चयन किया गया है। अध्ययनकर्त्री द्वारा उपरोक्त तीनों विश्वविद्यालयों से 100 कला वर्ग के विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है। इस तरह कुल 300 विद्यार्थियों (150–150 कला वर्ग छात्र एवं छात्राएँ) को सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श में चयनित विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के मापन के लिए एल0एन0दूबे द्वारा निर्मित 'समस्या समाधन परीक्षण' (PSAT) एवं संवेगात्मक बुद्धि के मापने हेतु डॉ0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित 'इमोशनल इंटेलिजेन्स इन्वेन्टरी' (ई.आई. आई.–एम.एम.) का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर नहीं है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि एक–समान है।

मुख्य शब्द– विश्वविद्यालय, छात्र–छात्राएँ, कला वर्ग, समस्या समाधान योग्यता, सांवेगिक बुद्धि, तुलना।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना– युवा छात्र व छात्रायें समस्त राष्ट्र के व समाज के लिए मूल्यवान है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र के युवा के भविष्य पर निर्भर करती है। युवावस्था में ही किसी भी छात्र में नागरिकता के संस्कारों का बीजारोपण व पोषण सहजतापूर्वक होता है। इस अवस्था में छात्र के मानसिक दृष्टि से तरह तरह की समस्याओं का समावेष होना स्वभाविक है। शिक्षा व्यक्ति के विचारों को जो कि सांवेगिक एवं बौद्धिक होते है कि पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होती है, इसके द्वारा बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वआत्मन, स्वप्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, तनाव नियंत्रण, रखना सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। जिन बालकों अथवा छात्रों में संवेगात्मक स्थिरता का अभाव होता है तथा वातावरण के साथ समायोजन करने में वे कठिनाई का अनुभव करते है अतः शिक्षा द्वारा छात्रों को सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायेजित किया जा सकता है। मानसिक द्वन्द की स्थिति में छात्र अपनी इच्छा पूर्ति का आभाव महसूस करता है। युवा अवस्था में छात्र का शारीरिक व मानसिक विकास अपनी चरम सीमा पर होता है। किसी भी युवा की चेतना में इस समय स्वतंत्रता की भावना दिखाई देती है। प्रत्येक युवा को घर परिवार समाज तीनो ही स्थानो पर संघर्ष का सामना करना पड़ता है यह समस्या हमेशा बनी रहती है। राष्ट्र में ये समस्या आए दिन और अधिक गंभीर होती चली जा रही है।

समस्या समाधान एक व्यक्तिगत घटना है और इसमें उच्च क्रम की संज्ञानात्मक क्षमताओं का अभ्यास और चेतन और अचेतन स्तरों पर निरंतर और लगातार संघर्ष करना शामिल है। यह जटिलता के दिए गए स्तरों पर सोचने और तर्क करने की क्षमता है।

हालाँकि, यह खोज संरचना के संगठन की एक सतत प्रक्रिया के रूप में विकास पर पियागेट (1958) और उनके सहयोगियों के काम की पुष्टि करती है, प्रत्येक नया संगठन पिछले समाधान को एकीकृत करता है। वह उस महत्वपूर्ण भूमिका पर भी जोर देते हैं जो सोच और तर्क समग्र रूप से मानव के विकास में निभाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि इससे पहले कि कोई व्यक्ति अपने वातावरण या क्षेत्र में प्रभावी ढंग से कार्य कर सके, उसे आवश्यक योग्यता विकसित करने की प्रक्रिया से गुजरना होगा। यह मनुष्यों में वृद्धि और विकास के रूप में भी प्रदर्शित हो रहा है, यानी, बच्चे को बोलने से पहले, उसे बड़बड़ाना चाहिए, चलने से पहले, उसे रेंगना चाहिए।

कुमार, एम. (2020) के अनुसार रचनात्मकता सार्वभौमिक है। हममें से प्रत्येक में कुछ हद तक रचनात्मकता होती है। हालाँकि रचनात्मकता क्षमताएँ प्राकृतिक प्रतिभाएँ हैं। यद्यपि रचनात्मकता की अभिव्यक्ति से कुछ नया या नैतिक उत्पन्न होता है। समस्या समाधान की क्षमता एक मानसिक प्रक्रिया है जो बड़ी समस्या प्रक्रिया का संचालन हिस्सा है जिसमें समस्या को ढूंढना, आकार देना और अंतिम लक्ष्य तक पहुंचना शामिल है। समस्या वह स्थिति है जहां आपके पास चीजों को बेहतर बनाने के लिए बदलाव लाने का अवसर हो।

समस्या समाधान संज्ञानात्मक प्रक्रिया का उच्चतम संचालन है। समस्या समाधान का अच्छा योग्यता छात्रोंए शिक्षकों को उनके शैक्षिकए व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में सशक्त बनाता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, यह मान्यता बढ़ रही है कि यदि शिक्षा को तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में कुशल विचारकों और नवप्रवर्तकों का उत्पादन करना है, तो समस्या निवारण योग्यता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसलिए जब कोई छात्र पढ़ाई के लिए कोई वर्ग चुनता है तो उसे अपनी समस्या समाधान योग्यता के बारे में पता होना चाहिए।

डेवलेमेन्ट एण्ड इमोशनल बुद्धि (1997) में निम्न रूप में परिभाषित किया– *''सांवेगिक बुद्धि को ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें संवेगों को तार्किक ढ़ग से प्रत्यक्षीकरण करना, उसे अपनी विचार प्रक्रिया में एकीकृत करना, उसे समझना तथा उसके प्रबन्धन से है।''*

परिभाषा पर विचार करे तो स्पष्ट होता है कि हम सभी में अपने संवेगों से निपटने हेतु अलग–अलग ढंग की क्षमता और योग्यता पायी जाती है और उसी के अनुरूप एक समूह में दूसरों की तुलना में किसी भी व्यक्ति विशेष की सांवेगिक बुद्धि की दृष्टि से अधिक या कम बुद्धिमान माना जाता है।

संवेगों से अवगत होने से तात्पर्य है कि आपको किसी संवेग की अनुभूति हो रही है तो आप यह जाने कि आपको किस प्रकार की अनुभूति हो रही है।

स्वीकारने से तात्पर्य है कि आप यह माने कि संवेगों का तात्पर्य उस जैविक प्रक्रिया से है जो आपके शरीर और मस्तिष्क में हो रही है और उसका सदैव तार्किक या आधारयुक्त होना आवश्यक नहीं है। अतः संवेग विशेष के औचित्य की ओर ध्यान न देकर उसकी अनुभूति करने की योग्यता आप में होनी चाहिए।

सही दृष्टिगत या अभिवृत्ति से तात्पर्य उस विश्वास से है जो किसी संवेग से जुड़ा हुआ होता है। ऐसा समय भी होता है जब किसी अभिवृत्ति विशेष के कारण किसी संवेग का आगमन होता है अथवा उसके प्रदर्शन में किसी अभिवृत्ति की गहरी छाया रहती है।

सांवेगिक बुद्धि को गोलमैन (1998) ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है– ''यह अपने एवं दूसरों के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करके एवं अपने एवं अपने सम्बन्धों में संवेग को प्रतिबन्धित करने की क्षमता है। सांवेगिक बुद्धि द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक बुद्धि या बुद्धिलब्धि द्वारा मापे जाने वाले पूर्णतः संज्ञानात्मक क्षमताओं से भिन्न परन्तु उसके पूरक होते है।''

lkaosfxd cqf) esa O;fDr dh fuEukafdr ;ksX;rk,a fufgr gSa&

- vius vki dks izsfjr djus dh ;ksX;rk
- vius laosxksa dh mfpr vfHkO;fDr dh ;ksX;rk
- vius laosxksa dks fu;fer djus dh ;ksX;rk
- tks[ke ewY;kadu dh ;ksX;rk
- }a} lek/kku dh ;ksX;rk

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान योग्यता में सांवेगिक बुद्धि का बहुत बड़ा योगदान होता है।

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

उद्देश्यों के आधार पर निम्नांकित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध विधि–

समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या –

अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श का चयन

अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्वक ढंग से विश्वविद्यालयों का चयन जिसमें प्रयागराज जनपद के एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रयागराज, प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह (रज्जु भैया) विश्वविद्यालय एवं नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) का चयन किया गया है। अध्ययनकर्त्री द्वारा उपरोक्त तीनों विश्वविद्यालयों से 100 कला वर्ग के विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है। इस तरह कुल 300 विद्यार्थियों (150–150 कला वर्ग छात्र एवं छात्राएँ) को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

न्यादर्श में चयनित विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के मापन के लिए एल0एन0दूबे द्वारा निर्मित 'समस्या समाधन परीक्षण' (PSAT) एवं संवेगात्मक बुद्धि के मापने हेतु डॉ0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित 'इमोशनल इंटेलिजेन्स इन्वेन्टरी' (ई.आई.आई.–एम.एम.) का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

प्रदत्तों के संकलन व मूल्यांकन के पश्चात् अगला पद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्रदत्तों का विश्लेषण करना होता है। इस अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उपरोक्त शून्य परिकल्पना की जाँच के लिये टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है और परिणाम सारणी संख्या 1 में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 1

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता के मध्य टी–मान

क्र0 सं0	लिंग	(N)	(M)	(S.D.)	$D=(M_1 \sim M_2)$	σ_D	t-value	सारणी मान एवं परिणाम
1.	छात्र	150	11.78	3.90	0.85	0.46	1.85	2.59 df=298 असार्थक
2.	छात्राएँ	150	12.63	4.07				

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि युग्म का टी–मान का मान 1.85 जो स्वतंत्राश 298 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.59 से कम है। यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रतिदर्श समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शोध परिकल्पना *''विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर है''* अस्वीकृत व शून्य परिकल्पना *''विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है''* स्वीकृत की गई है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्राओं का समस्या समाधान योग्यता का मध्यमान (12.63) जो कला वर्ग के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता के मध्यमान (11.78) से अधिक है किन्तु दोनों के मध्यमानों के मध्य टी–मान में सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता लगभग बराबर है। अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम के सापेक्ष पूर्व शोध परिणाम **शर्मा. (2006), सेलांगोर (2009), एम. मंजुला एवं नटराज, पी.एन. (2012), वीरासामी, अशोक कुमार (2019), एम.एस. (2020), बी. वेंकटराथनम (2021) एवं वी. लिन्सी पुष्पा और के.ए. शीबा (2022) एवं नीलम एवं राम, शंकर (2023)** प्राप्त हुए।

वाघमारे (2017) के अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि महिला विद्यार्थियों के पास पारिवारिक एवं स्कूल/कॉलेज समस्या पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है एवं महिला एवं पुरुष विद्यार्थी वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्या के सन्दर्भ में एक–दूसरे के समान है।

जबकि अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम के विपरित शोध परिणाम **ठाकुर, निरूपमा (2013), गुप्ता, मधु और पासरी, पूजा (2015)** प्राप्त हुये है।

2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उपरोक्त शून्य परिकल्पना की जाँच के लिये टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है और परिणाम सारणी संख्या 2 में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 2

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्य टी–मान

सांवेगिक बुद्धि के आयाम	लिंग	(N)	(M)	(S.D.)	D= (M_1~M_2)	σ_D	t-value	सारणी मान एवं परिणाम
अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता	छात्र	150	36.68	4.12	0.31	0.46	0.67	2.59 df=298 **असार्थक**
	छात्राएँ	150	36.37	3.93				
वैयक्तिक जागरूकता	छात्र	150	31.00	4.04	2.61	0.45	5.80	2.59 df=298 **सार्थक**
	छात्राएँ	150	28.39	3.69				
अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन	छात्र	150	34.47	4.05	0.31	0.43	0.72	2.59 df=298 **असार्थक**
	छात्राएँ	150	34.78	3.37				

वैयक्तिक प्रबन्धन	छात्र	150	28.88	3.30	1.03	0.37	2.78	2.59 df=298 **सार्थक**
	छात्राएँ	150	29.91	3.12				
सांवेगिक बुद्धि	छात्र	150	131.03	9.18	1.58	0.99	1.596	2.59 df=298 **असार्थक**
	छात्राएँ	150	129.45	7.90				

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता के युग्म का टी–मान का मान 0.67 जो स्वतंत्राश 298 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.59 से कम है। यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रतिदर्श समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्रों की अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता का मध्यमान (36. 68) जो कला वर्ग के छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता के मध्यमान (36.37) से अधिक है किन्तु दोनों के मध्यमानों के मध्य टी–मान में सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता एक–समान है।

सांवेगिक बुद्धि के आयाम वैयक्तिक जागरूकता के युग्म का टी–मान का मान 5.80 जो स्वतंत्राश 298 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.59 से अधिक है। यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रतिदर्श समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम वैयक्तिक जागरूकता में सार्थक अन्तर है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्रों की वैयक्तिक जागरूकता का मध्यमान (31.00) जो कला वर्ग के छात्राओं की वैयक्तिक जागरूकता के मध्यमान (28.39) से अधिक है साथ ही दोनों के मध्यमानों के मध्य टी–मान में सार्थक अन्तर है। परिणामतः कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र, कला वर्ग के छात्राओं की अपेक्षा अधिक वैयक्तिक जागरूकता है।

सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन के युग्म का टी–मान का मान 0.72 जो स्वतंत्राश 298 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.59 से कम है। यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रतिदर्श समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग की छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन का मध्यमान (34.78) जो कला वर्ग के छात्रों की अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन के मध्यमान (34.47) से अधिक है किन्तु दोनों के मध्यमानों के मध्य टी–मान में सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन एक–समान है।

सांवेगिक बुद्धि के आयाम वैयक्तिक प्रबन्धन के युग्म का टी–मान का मान 2.78 जो स्वतंत्राश 298 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.59 से अधिक है। यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रतिदर्श समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम वैयक्तिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्राओं की वैयक्तिक

प्रबन्धन का मध्यमान (29.91) जो कला वर्ग के छात्रों की वैयक्तिक प्रबन्धन के मध्यमान (28.88) से अधिक है साथ ही दोनों के मध्यमानों के मध्य टी–मान में सार्थक अन्तर है। परिणामतः कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की वैयक्तिक प्रबन्धन कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

सांवेगिक बुद्धि के युग्म का टी–मान का मान 1.59 जो स्वतंत्राश 298 तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर टी–परीक्षण के सारणी मान 2.59 से कम है। यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रतिदर्श समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग की छात्रों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान (131.03) जो कला वर्ग के छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान (129.45) से अधिक है किन्तु दोनों के मध्यमानों के मध्य टी–मान में सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामतः कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि एक–समान है।

अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम के सापेक्ष पूर्व शोध में **खलेदियन, मोहम्मद एवं अन्य (2013)** प्राप्त हुआ। **कुमार, प्रवीण एवं शर्मा, दिनेश (2017)** ने परिणाम में इंगित किया कि– संवेगों का सही उपयोग व प्रभावी ढंग से प्रबन्धन व नियंत्रण करने की योग्यता को संवेगात्मक बुद्धि कहा जाता है। किसी सुसमायोजित, सुखी तथा सफल व्यक्ति के जीवन में सामान्य बुद्धि के स्थान पर संवेगात्मक बुद्धि अधिक महत्त्वपूर्ण तथा सार्थक सिद्ध होती है। बालकों में संवेगात्मक बुद्धि प्रस्फुटन, प्रवर्तन तथा विकास के कार्य में उनके परिजनों, साथियों, शिक्षकों, पास–पड़ोस, विद्यालय तथा जनसंचार के साधनों के द्वारा तरह–तरह से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की जा सकती है।

निष्कर्ष–

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में अन्तर नहीं है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एक–दूसरे के समान है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्रों की अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता का मध्यमान (36.68) जो कला वर्ग के छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता के मध्यमान (36.37) लगभग बराबर है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के आयाम अन्तर्वैयक्तिक जागरूकता में अन्तर नहीं है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्रों की वैयक्तिक जागरूकता का मध्यमान (31.00) जो कला वर्ग के छात्राओं की वैयक्तिक जागरूकता के मध्यमान (28.39) से अधिक है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र, कला वर्ग के छात्राओं की अपेक्षा अधिक वैयक्तिक जागरूकता है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग की छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन का मध्यमान (34.78) एवं कला वर्ग के छात्रों की अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन के मध्यमान (34.47) लगभग बराबर है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अन्तर्वैयक्तिक प्रबन्धन एक–समान है।

- विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग के छात्राओं की वैयक्तिक प्रबन्धन का मध्यमान (29.91) जो कला वर्ग के छात्रों की वैयक्तिक प्रबन्धन के मध्यमान (28.88) से अधिक है अर्थात् विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्राओं की वैयक्तिक प्रबन्धन कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा उच्च है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर कला वर्ग की छात्रों की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान (131.03) एवं कला वर्ग के छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान (129.45) लगभग बराबर है अर्थात् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि एक–समान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, प्रवीण एवं शर्मा, दिनेश (2017). शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका : एक अध्ययन, *शृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,* वॉल्यूम–5, इश्शू–4, पृ0 172–175
2. खलेदियन, मोहम्मद एवं अन्य (2013). द रिलेशन बिटविन एकाउन्टिग स्टूडेन्ट्स इमोशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड टेस्ट एंग्जायटी एण्ड आलसो देयर ऐकेडमिक एचिवमेन्ट, *यूरोपियन जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेन्टल बॉयोलॉजी,* 3(2). पृ0 585–591
3. B.Venkatarathanam (2021). A Study On Problem Solving Ability Of Higher Secondary School Students In Relation To Their Academic Achievement, TNTEU International Journal of Educational Research, VOLUME 2, ISSUE 1, 2021 PAGE: 32
4. Christina Lalramthari (2023). A Study on Problem-solving Ability among R. Lalduhawma, Lalhlimpuii Ralte and Higher Secondary School Students in Aizawl City in Relation to Locale and Type of School Management, International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), Volume 5, Issue 2, March-April 2023
5. Dawngliani, M.S. and Fanai, Lallianzuali (2020). A Study On Problem Solving Ability Among Secondary School Students In Aizawl City With Reference To Gender, Volume 7, Issue 4, pp. 183-189
6. Gupta, Madhu and Kavita, Pooja Pasrija (2016). Problem Solving Ability & Locality as The Influential Factors of Academic Achievement Among High School Students, Chitkara University, Issues and Ideas in Education, Vol- 4, No- 1, March 2016, pp. 37–50
7. Manjula, M. & Nataraj, P.N. (2012) "A Study of Problem Solving Ability among the Matriculation School Students" Ph.D. Scholar & Asst. Pro. Department of Edu. Annamalai U., International Journal of Teacher.
8. Suman and Pooja (2022). A Study of Problem Solving Ability Among High and Low Achiever Boys in the Subject of Mathematics, International Journal of Research (IJR) e-ISSN: 2348-6848 p-ISSN: 2348-795X Vol. 9 Issue 05 May 2022
9. Thakur, Nirupma (2013). "A Study of Problem Solving Ability among Undergraduate Mathematical Gifted Students." Assistant Professor, Department of Mathematics, Hitkarini Mahila Mahavidyalaya, Jabalpur, Volume: 3, Issue: 8, Aug 2013, ISSN - 2249-555X
10. V. Lincy Pushpa and dr. K.A. Sheeba (2022). A study on Problem-Solving Ability among Higher Secondary Students, Research and Reflections on Education ISSN 0974 - 648 X(P) Vol. 20 No. 4 Oct-Dec 2022